गुरुवाणी

शंका को आप अपने में समाहित रखेंगे तो आप उज्जवल भविष्य की कामना नहीं कर सकते।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक २१, वाराणसी। रविवार १५ नवम्बर २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

कपालेश्वर

सामान्यतया कपाल शब्द से खोपड़ी या मस्तिष्क का भान होता है। प्रत्येक जीवधारी का यही अंश उसे सचेनता प्रदान करती है। मानव शरीर संरचना में इसीलिये मस्तिष्क को सभी अंगों में राजा कहा गया है, जिससे जीवात्मा द्वारा समस्त क्रिया-प्रक्रिया, सोच-समय आदि का संचालन किया जाता है। व्यापक अर्थों में समस्त प्राणियों के प्राण के रचयिता को कपालेश्वर की संज्ञा दी जाती है, यानी जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ही निर्माता है, जिसका आलय ही आकाश यानी गगन हो तथा आधार सम्पूर्ण पृथ्वी हो। कपालेश्वर को ही ब्रह्म भी कहा जा सकता है यानी जो सबसे बड़े हो, जिसका आदि अन्त न हो जो अनन्त ब्रह्माण्ड के जनक हों, नायक हो तथा जिनके विषय में पूर्ण जानकारी ''जिमिम पीपिलिका सागर थाही'' की तरह से हो प्रकृति की समस्त घटाओं का दिग्दर्शन, मनोहारी समस्त दृश्य कपालेश्वर के ही अंग प्रत्यंग की रूप रेखा है सभी धार्मिक, आस्था के स्थानों पर सभी मतावलम्बियों के मतों में विभिन्न रूपों में कपालेश्वर के ही दर्शन होते हैं। सभी प्रकार के सांसारिक विभूति, ऐश्वर्य, रूप, रंग, बल जो भी हमें दृष्टिगोचर होता है अथवा हम अनुभव करते हैं, उसमें कपालेश्वर की ही लीला का रूप है। प्रकृति के किसी एक संरचना के अध्ययन में मानव की पीढ़ियाँ बीत जाती है, तब भी सम्यक् ज्ञान प्राप्त नहीं होता, प्रकृति में मानवों द्वारा विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक अविष्कार, खोज सभ्यता के विकास से अनवरत जारी है, फिर भी इस खजाने की थाह नहीं है, कपालेश्वर के अनमोल, अपार खजाने से कुछ प्राप्त हो जाता है, तो उसी को नया अन्वेषण खोज अथवा डिसकवरी, रिसर्च नाम दिया जाता है जिससे यह सिद्ध होता है कि सभी चीजे पूर्व से ही प्रकृति में भरी पड़ी है, उन्हें बस चिह्नित कर समाज के सम्मुख रख देने में ही मानव की सारी उम्र खप जाती है, तो उसे सराहा जाता है एवं नोबेल पुरस्कार जैसे सम्मान से नवाजा जाता है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उस व्यक्ति की ख्याति हो जाती है।

प्रत्येक मानव की चलता-फिरता कपालेश्वर का अंशभूत यानी कपालेश्वर ही है, जो प्राणों से प्रतिष्ठित है, अपने को ही पहचानना कपालेश्वर को जानना है अघोर वचन शास्त्र के ''ईश्वर'' शीर्षक अध्याय में पूज्यपाद अवधूत भगवान राम जी ने श्रद्धालु भक्तों को स्पष्ट करते हुए कहा है ''हे गुमराह प्राणी! ईश्वर को ढूँढ़ने में तुम गुमराह मत हो। यदि तुम्हारा हृदय पवित्र है तो ईश्वर तेरे पास है। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हीं ईश्वर के मंदिर हो और ईश्वर तुममें ही रहता है ''उक्त वाक्यों में ईश्वर का तात्पर्य कपालेश्वर से ही है। जिसके प्रभाव से ही हम जिज्ञासु, संवेदनशील बने रहते है। कपालेश्वर का प्रभाव समस्त ब्रह्माण्ड में समान रूप से पड़ता है, कण-कण की संरचना, अणु-परमाणु, सूक्ष्मतर सूक्ष्म से विशालकाय जीव जन्तुओं के अस्तित्व के रहस्य में कपालेश्वर की घटा समाई हुई है। मानव समाज या पृथ्वी पर निवास करने वाले प्राणी तो एक अंश भर का बोध कराते हैं, आकाश यानी नील गगन तथा वसुन्धरा हम सभी के हर तरह के कर्मों के साक्षी रहते हैं, एवं तद्नुकूल दण्ड अथवा पुरस्कार की व्यवस्था भी इनके नियमों प्राकृतिक उपनियमों में स्वमेव समाहित रहती है।

पृथ्वी पर कपालेश्वर की उद्भूत कृति मानव तो समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ इसलिये है कि प्रकृति के द्वारा इसे प्रेरणा के रूप में, पुरुषार्थ, प्रयत्न तथा प्रार्थना का वरदान प्राप्त है। मानव अपने पुरुषार्थ से, अनथक प्रयत्न से क्या नहीं प्राप्त कर लेता है? यदि उसमें अदम्य साहस, लक्ष्य के प्रति समर्पण तथा उदात्त भावना लबालब भरी हो स्थिति-परिस्थिति तो मानव के परीक्षण के लिये कपालेश्वर की ही प्रेरणा से विनिर्मित होती रहती है, जो व्यक्ति उसका डटकर मुकाबला करता है, जुझारूपन दिखाता है, हार नहीं मानता, वही अन्त में विजयी होता है, कपालेश्वर का सच्चा अनुयायी, सच्चा अंशभूत कहलाने का अधिकारी होता है। भाग्य का निर्माण तो मानव की आचरण रेखाओं से ही होता है। यह निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं ही होता है जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है कि ''कर्म प्रधान विश्व कर राखा; जो जस करई तो तस फल चाखा'' यानी कपालेश्वर के मानव के उसके कर्म के अनुसार ही फल का विधान है, तथा पुरुषार्थी मानव ही वसुन्धरा के अतुल्य वैभव का स्वामी बनता है। ''वीर भोग्या वसुन्धरा'' की शैली कपालेश्वर द्वारा ही मानवों को प्रदान की गई है। उसे श्रम का वरदान दिया गया है। वैज्ञानिक, किसान या जिस रूप में भी वह कार्यरत है उसकी श्रमशीलता ही उसे योग्य एवं सम्मानित बनाकर श्रद्धा का पात्र बनाती है, अपने-अपने क्षेत्र के सच्चे आराधकों का आह्वान निरन्तर ही प्रकृति रूपी कपालेश्वर के द्वारा किया जाता रहा है। अपने-अपने दिलचस्पी वाले धंधे में यदि व्यक्ति मन, कर्म, वचन से पूरा लगन प्रदर्शित करे, तो मानसिक एवं शारीरिक बल का सदुपयोग करने में कोताही न करे तो कोई कारण नहीं कि वह उसमें महारत हासिल न कर सके।

मानव के इस नश्वर शरीर की आत्मा का अमरत्व ही उसके मार्ग का प्रकाश पुंज है, उसकी शक्ति है, उसका प्रगति पथ है, बशर्ते कि उसकी अनुभूति अभ्यास द्वारा, सत्कर्मों द्वारा वह करता रहे। परिश्रम की अथक पूँजी उसकी बढ़ती रहे, चाहे लाख अनुकूल परिस्थितियाँ हो या किसी डॉक्टर, वैज्ञानिक अथवा प्रोफेसर, राजनीतिज्ञ, नामी फिल्म आर्टिस्ट का ही युग, युगी क्यों न हो यदि उसने श्रम की कुँजी से अपने भाग्य के ताले को नहीं खोला तो उसकी अनुकूलता, प्रतिभा दबी की दबी रह जाती है, वह चाहकर मात्र इच्छा कर वह सब कुछ हासिल नहीं कर सकता जिससे एक पुरुषार्थी अपने अदम्य साहस, ऊर्जा, प्रार्थना एवं प्रयत्न के बल पर प्राप्त कर लेते हैं। यद्यपि पुरुषार्थ के साथ ईमानदारी से प्रयत्न का भी अपना स्थान है जिससे संभावित लक्ष्य की प्राप्ति सुगम हो जाती है। परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात् सद्फल वृक्ष की प्रजाति पर ही निर्भर करता है, कहने का तात्पर्य है कि यदि कोई अनैतिक कार्य करने वाला, समाज विरोधी, राष्ट्र विरोधी गतिविधि को अंजाम देने वाला कोई कार्य चाहे जितनी सिद्दत, परिश्रम, बुद्धिमानी से किया जाय, उसका परिणाम भयावह ही होता है। हमारे पुराण इसके साक्षी हैं कि यद्यपि असुर देवताओं से किसी प्रकार कमतर नहीं थे, परन्तु अपने कर्म के अनुसार वे निरन्तर दण्ड के भागी बनें तथा उनकी समस्त शारीरिक एवं मानसिक क्षमता धरी की धरी रह गई। अत: लक्ष्य सत्परिणामों वाला ही होना चाहिए तथा उसका फल सद्पात्रों को मिलता जाय, यह भी सुनिश्चित करना श्रमशीलता के सिपाहियों की ही

शेष पृष्ठ दो पर

सूर्यषष्ठी व्रत

भुवन भाष्कर भगवान सूर्य की उपासना सगुन पंचोपासना के अन्तर्गत की जाती है। इनकी उपासना से सब प्रकार के रोग दूर होते हैं। इनके रथ में सात रंग के सात घोड़े जुते हुए हैं, इसी रथ पर ये सारे भुवन की प्रदक्षिणा किया करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सूर्य की रश्मियों से न केवल प्रकाशीय ऊर्जा प्राप्त होती है बल्कि विटामिन डी का भी अक्षय भंडार इन्हीं रश्मियों में होता है। फलस्वरूप हमारे ऋषि, मुनियों ने सूर्य षष्ठी व्रत के तपस्यापरक आराधना का विधान बताया है। यह महापर्व कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। इस व्रत के अन्तर्गत नर-नारी सायंकाल नदी, तालाब अथवा जल-राशि के किनारे सायं अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। यद्यपि विधान के अनुसार कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से ही व्रत आरम्भ होता है तथा पंचमी तिथि को निराजल रहने का नियम है तथा षष्ठी तिथि को सायं डाल सजाकर, दीप जलाकर भक्तिभाव से भगवान भाष्कर की पूजा होती है तथा रात्रि जागरण के पश्चात् सप्तमी तिथि को उगते सूर्य को जल एवं गौ के दूध का अर्घ्य देकर विशेष कर महिलायें अपने पीहर एवं ससुराल के सदस्यों के स्वस्थ, समृद्ध जीवन हेतु उगते आदित्य से कामना करती हैं।

भगवान सूर्य की उपासना के साथ ही आदिशक्तिस्वरूपा छठी मईया की भी आराधना की जाती है। इसीलिये डाला छठ के नाम से भी त्योहार मनाते हैं।

सनातनी मान्यता के अनुसार पूजा या उपासना से ईश्वर के सर्वव्यापकता एवं सर्व चेतनता का भाव विकसित होता है जिससे हमारे जीवनक्रम के क्रिया-कलाप उत्कृष्ट होते चले जाय तथा इस निर्धारित अवधि के जीवनकाल का हम भरपूर सदुपयोग कर सके। घाटों पर प्रकाश को साथ ले जाने में व्रती मनुष्यों के अन्तकरण में ईश्वर के दिव्य रश्मियों का प्रस्फुटन होता है जिससे कर्त्तव्यनिष्ठ होने का मार्ग प्रशस्त होता है। जबकि नास्तिक को तो इस जीवन में चैन मिल ही नहीं सकता। मनुष्य को ईश्वर अंश मानने का यह भी कारण है कि प्रकृति (ईश्वर) के साथ उसका सामंजस्य बना रहे। अनुष्ठान व्रत से आत्मा मानव शरीर का कायाकल्प हो जाता है, चित्त निर्मल हो जाता है जिससे आत्म परिष्कार-लोकमंगल से युक्त हमारी बुद्धि परमार्थ की ओर अग्रसर होती है। हमारा जीवन सफल होता है तथा निर्विकार भाव से परोपकारिता, आत्मसंतोष एवं संयमशीलता से हम एक दूसरे के साथ परस्पर मिल जुलकर सौहार्दपूर्ण वातावरण का सृजन कर समाज को स्वर्ग बनाते हैं।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

कपालेश्वर

जिम्मेदारी है अन्यथा ''अंधी पीसे, कुत्ता खाय'' वाला परिश्रम निरर्थक ही सिद्ध होता है। कपालेश्वर के सच्चे सपूतों के चेहरे ओज तेज श्रमशीलता एवं शालीनता से परिपूर्ण होता है। उसकी संतोष भरी मस्ती उसके स्वस्थ प्रभामंडल का संकेत करती रहती है, उसे अपने सदाशयता के साथ किये गये कार्यों के प्रति गर्व होता है। उसमें अहंकार या अहंभाव का सदा अनुभव रहता है, उसके उन्नत ललाट पर पसीने की बूँदें मोती की भाँति निखरती रहती है, वह समाज की क्रिया-प्रतिक्रिया के चक्कर में अपने कार्य को अंजाम नहीं देता बल्कि वह तो सर्वतोभावेन समर्पित होकर खून-पसीना एक एक करके अपने रोजी एवं रोजगार से प्राप्त नैतिक धन में संतुष्टि की साँस लेता है। उसे अपनी सीमित आय में ही सारा साधन जुटाकर भविष्य के आकस्मिकता की भी व्यवस्था का ध्यान रहता है। परन्तु नैतिकता से कमाकर स्वस्थ, संतुष्ट रहना एवं अपने परिवार के साथ आनन्दमय जीवन व्यतीत करना कोई आसान कार्य नहीं है। इसके लिए उसे अपने समस्त विकारों पर भी कड़ा नियंत्रण रखना पड़ता है, क्योंकि बिना कड़े घुड़सवार के सांसारिक लिप्साओं में लिपट जाने वाले मन रूपी बिगड़ैल घोड़े को वश में करना कठिन एवं श्रम साध्य है। अस्तु इन प्राकृतिक अवरोधों को दूर कर ही हम पवित्र फल के स्वाद का रसास्वादन करने में सफल हो सकते हैं, इस प्रकार कम आय वाला व्यक्ति तो अक्सर अत्यधिक आय वालों व्यक्तियों से सुखी सम्पन्न, स्वस्थ होते हैं। वे अत्यधिक धनिकों से अपेक्षाकृत अधिक चुस्त, दुरुस्त एवं मस्ती में रहते हैं। वे सतत सावधानी से अपने धुन में लगे रहते हैं। यह सर्वविदित ही है कि अनैतिकता, अनाप-शनाप तरीके से विपुल सम्पदा अर्जित करने वालो व्यक्तियों की दशा मणि धर सर्प की होती है, वे सुख-चैन की नींद सो ही नहीं सकते इसीलिये संत कबीर ने कपालेश्वर से ''साई इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाय, मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय'' की मन्नत माँगी थी क्योंकि वे जानते थे कि शान्ति के सुख संतोष के सुख की प्राप्ति पैसों से नहीं तौली जा सकती। क्षमता से अधिक धनार्जन का अर्थ है उसी अनुपात में पाप का बढ़ना। यद्यपि कपालेश्वर के इस संसार में सभी सामान्य मनुष्यों की इच्छा असामान्य असाधारण बनने की होती है, लेकिन वास्तविक सफलता उन्हें ही हाथ लगती है जो सच्चे हृदय से अपने कर्मों के लेखा-जोखा का प्रतिदिन हिसाब रखते हैं तथा ईमानदारी से अपनी त्रुटियों को निकालते रहते है तथा बहादुरी से उन्हें स्वीकार कर एक होशियार किसान की भांति अनचाहे उगे खर-पतवारों को निर्ममतापूर्वक उखाड़ फेंकते हैं तथा अपने मानस पटल को सद्ज्ञानी, सद्व्यवहार, अहंकार रहित रखकर अपने कर्म को धैर्यपूर्वक परिष्कृत, परिमार्जित करते रहते है। मार्ग में आने वाली हर बाधा का वे सफलतापूर्वक सामना करते रहते हैं तथा अन्ततः सुख-चैन की बंशी बजाते हुए सफल जीवन जीते हैं।

अस्तु, कपालेश्वर के संतानों को इस सुर दुर्लभ मानव काया को साथ लेकर, धैर्य से निर्मल जीवन जीने की कामना के साथ पवित्रता का सम्बल लिये निरन्तर परिश्रम एवं पुरुषार्थ का दामन थामे रहना चाहिए तथा उस अज्ञात कपालेश्वर को जो औघड़ अघोरेश्वर को ही संकेत करते हैं, को धन्यवाद देना चाहिए कि वे आपको एक शान्त, निराभिमानता का जीवन प्रदान करते रहे, जिससे आपका जीवन दिनोदिन सहकारी, परमार्थी अपेक्षाकृत वीतरागी बना रहे, जिससे अपने अतिरिक्त आपके व्यक्तित्व का सौरभ सुगन्ध आपके परिवार, समाज को स्वस्थ रक्खे एवं हम सदा कपालेश्वर के कृपा-अनुदान के अधिकारी बने रहे।

शोक-संदेश

(१) अघोरपीठ बाबा कीनाराम स्थल के सदस्य तथा निष्ठावान अघोर भक्त श्री लक्ष्मण सिंह जी के पिता श्री केदार सिंह का निधन दिनांक २७.१०.२०१५ को हो गया। सम्पन्न शोक गोष्ठी में अघोर भक्तों ने हुतात्मा की शान्ति के लिये अघोरेश्वर से प्रार्थना की।

(२) अघोरेश्वर निनाद पत्रिका के ग्राफिक्स आशीष कुमार बरनवाल जी के पिता श्री शंकर नाथ बरनवाल का निधन दिनांक १०.११.२०१५ को हो गया।

इस संदर्भ में सम्पन्न शोक गोष्ठी में उपस्थित अघोर भक्तों ने हुतात्मा की शान्ति के लिए अघोरेश्वर महाप्रभु से कामना की।

बन्दे श्री सर्वेश्वरी : हमारे देशवासियों को सद्‌बुद्धि दें

धर्म बन्धुओं!

आज शरद नवरात्र के पर्व पर निवेदन है कि आज कोई खास गोष्ठी का कार्यक्रम नहीं है। किसी भी दिन आपसे यही कहूँगा कि अपना काम काज छोड़कर कल-कारखाने में, खेत बाड़ी या दुकान दौरी छोड़कर या घर गृही का काम छोड़ कर खाली हम लोगों की बात सुनने के लिये और वह बात हम लोगों की सार्थक न हो तो उतना समय भी बर्बाद होता है और राष्ट्र की उतनी सम्पत्ति भी बर्बाद होती है। आज कल हमलोगों के देश में खेत-खलिहान, कल-कारखाने या दुकानदौरी में हड़ताल करके इकट्ठा कर दिया जाता है, चलो, कुछ पैसे भी मिल जायेंगे। इसी तरह हम भी आप लोगों को ऊँची-ऊँची बातें बताते रहें और आप लोग अपने बच्चे परिवार, राष्ट्र तथा समाज को, उनके अधिकार से वंचित करते रहें, अपना भी वंचित करते रहेंगे। एक मामूली सी बात, हमारे जो छोटे बच्चे हैं, उन्हीं से हम ले लें, उनका भी अधिकार जो उनके लिए चाहिये, हम देने के लिए राजी नहीं है। उन्हें लालन पालन चाहिये, शिक्षा चाहिये, खेल खेलवाड़ में उनका मन लगता है, कहाँ हम दे पाते हैं। उन्हें यातना देते हैं बहुत सी महिलायें गोदी में लिये रहती हैं, उन्हें उठाकर फेंक देती हैं। ऐसे उनके भी अधिकार से हम वंचित करते हैं। इससे कितना बड़ा अत्याचार करता हूँ। मैं देवी का भक्त बनने चला हूँ, देवी का मैं अनुष्ठान करने जा रहा हूँ; देवी के पास अपना अधिकार जताने जा रहा हूँ। हमारा अधिकार क्या है? हम अपने बच्चे, बन्धु-बान्धव अपने शुभचिन्तकों के प्रति, उनका जो अधिकार है, हमसे प्यार पाने का, हमसे बहुत कुछ पाने का, कहाँ दे पाते हैं। ऐसे क्रूर मिजाज, ऐसी क्रूरता में लगे हुए व्यक्ति मेरे यहाँ क्या, पृथ्वी पर कहीं शरण मिलेगी?

शायद मैं सोचता हूँ कि मैं अच्छा व्यक्ति हूँ मुझे धन्य-धान्य और यह सब मिल जा रहा है, मगर अपनी आत्मा क्षमा नहीं करती, वह बराबर फटकारती रहती है, अरे दुर्निर्मित्त, तुम दूसरे के अधिकार का हनन करके, दूसरे के सुख का हनन करते हो और अपने सुखी रहना चाहते हो। आज इसके लिए इस नवरात्र पर्व पर आपसे निवेदन करना चाहता हूँ "बन्दे श्री सर्वेश्वरी" इस सम्बन्ध में प्रणिपात करता हूँ, वन्दना करता हूँ। क्योंकि हमारे देश के बच्चे, बूढ़े, जवान जिनका जो अधिकार है, समाज में, राष्ट्र में, परिवार-बन्धु-बान्धव या शुभ चिन्तकों में, उनका अधिकार मिले और वह सुख से, चैन से रहें। उनके लिए उन्हें सद्‌बुद्धि दें। अपने बन्धु-बान्धवों के साथ ईर्ष्या, द्वेष, घृणा न पहुँचाकर सुख और चैन से रहें। ऐसी ही आवश्यकता अपने देशवासियों की है, हर समाज की है, पूरे दुनिया की है।

पूज्य बाबा ने अपनी यात्रा की एक घटना की चर्चा करते हुए कहा कि मैं गया की तरफ से आ रहा था। जुलाई का प्रथम या दूसरा सप्ताह रहा होगा। बादल जैसा दिखा उधर से। हमने सोचा कि शायद बादल है, बरसेगा। मगर देखा कि गिद्धों का एक झुण्ड उधर से उतरता आ रहा है, उस गाँव पर। गाँव के गाँव तहस-नहस करते पंजाब से आसाम तक, आन्ध्रा प्रदेश से बिहार तक कितने विचरण कर रहे हैं। यह हमारे आपके वैमनस्य का ही द्योतक है। हमारी सैकड़ों उदार मान्यतायें हैं। कितना लाड़-प्यार हमारे पुरजन, परिजन और पत्नियों ने कितना सुख आनन्द दिया था, मगर इसको हम क्षीण-भीण हुए देखते है। हमारे गुरुजनों ने कितना प्यार से, स्नेह से हमें बुलाकर कानों में गुप्त रूप से मंत्रणा दिया था, हमारे हृदयों में बहुत कुछ आह्लाद दिया था। आज वही शरीर घृणा रूपी, द्वेष रूपी, ईर्ष्या रूपी अग्नि में भयंकर जल रहा है। हमारे समाज में कष्ट और देश में फैली हुई विषम परिस्थितियों के चलते हमें भगवती से आराधना करनी है हे माता, ऐसी विषम परिस्थिति जीवन में मुझे क्यों दिखाया जाता है। यह शुभदर्शन चाहे अच्छा हो या बुरा हो, ऐसे दर्शन की मैं कामना नहीं करता हूँ। चक्षु से या किसी की वाणियों द्वारा उत्प्रेरित करके किसी को उद्विग्न करते है, वह आकर कानों में सुनाते हैं। इसीलिये आज हमारे जो कुछ शुभचिन्तक लोग हैं, सज्जनों के रूप में महात्मा जन भी हैं, जो मुक्त होते हुए भी मुक्त कण्ठ से कुछ कह नहीं पाते हैं। वे इतना ग्रसित हैं कि जब भी वे कहते हैं अपने भाई बन्धु के बारे में मुझे सुनाते रहते हैं। वह दुःखी है, दुःखी है, उसके पास यह अभाव है, वह अभाव है। अपने लिए वे कुछ नहीं कहते हैं कि हे प्रभो! मैं अल्पायु हूँ और अल्प समय में ही सारे कार्यों को करना है। सबके साथ करुणा और दया के साथ अच्छे मनुष्य जैसे रहते हैं, वैसे रहे। इस पृथ्वी पर जब तक हैं अपने ऊपर अकलंक का टीका लगाकर और दूसरे को भी कलंकित करके, उनके अधिकार को नष्ट करके नहीं रहना चाहते। बन्धुओं, सन्त, सज्जन, अच्छे जन का ऐसा ही विचार होता है। ऐसा ही उनके सोचने समझने का ढंग भी होता है। मुझमें कुछ त्रुटि हो तो मैं नहीं बता सकता और बताना भी चाहता हूँ तो पूर्ण रूप से उसके लिए नहीं कह पाता हूँ। क्योंकि कुछ प्राणी ऐसे भी होते हैं जिनके आग मन से चित्त पर दोजख तरह की बातें अपने आप आती हैं, उछलती हैं, कहता है कि यह बात मत कहिये ऐसे नहीं, ऐसे कहिये। शायद वैसे ही मुझमें हो रहा हो इसलिए मैं बहुत कुछ छिपाता हूँ और उसका क्या प्रभाव होगा, मैं समझ नहीं पाता हूँ। बहुत कुछ कहना चाहता हूँ मगर वह कहने का अच्छा समय नहीं समझ पा रहा हूँ।

जो लोग यहाँ पूजा अनुष्ठान में हैं, अपना कालाक्षेप कर रहे हैं, समय के सदुपयोग में लगे हैं। एक आसन पर बैठकर बहुत से व्यक्ति को मैंने सुबह देखा, क्योंकि मुझे घण्टे भर टहलने के लिए मौका मिला, टहलते टहलते मेरी दृष्टि उधर पड़ ही जाती थी। मैं कोशिश करता कि मन को खाली करूँ, चित्त को उधर जाने से मगर आश्रम में रहने के कारण देखता था कि ध्यान कर रहे हैं और आचमनी करने का पात्र नहीं रखें हैं। या तो प्राप्त न होने के कारण या कुछ प्रभाव या अनजान में हो सकता है। बन्धुओं! पात्र में जल हो, आम का पल्लव हो, पल्लव बायें हाथ में रख कर, उससे जल तीन बार दाहिने हाथ में लेकर पीते हैं। इसको कहते हैं भूतशुद्धि, भूतशुद्धि का मतलब बीते हुए कर्म जो हमसे हो चुके हैं। उन कर्मों के निमित्त, हे परमात्मा इस शरीर से जो भी दुष्कर्म हुआ है, उन दुष्कर्मों को तिरोहित करें, ओम तत्सत् कहकर आचमनी करते हैं। आचमनी का मतलब है मुख-शुद्धि। फिर उसके बाद प्राणायाम थोड़ा करते हैं वायुशुद्धि। शरीर का प्राण तो वायु में आता है। इसलिए प्राण को बायें से खींचकर दाहिने से धीरे-धीरे छोड़ते हैं। यह वायु शुद्धि तीन बार, इसमें कोई समय नहीं लगता है, क्षण भर, जितना देर में खींचते हैं, उससे दूना देर तक रोकते हैं और उससे तीन गुना देर में धीरे-धीरे छोड़ते हैं तीन बार। भूतशुद्धि, प्राणशुद्धि फिर आचमनी करते हैं, आत्म तत्त्वम् शोधयामि स्वाहा, प्राण तत्वम् शोधयामि स्वाहा, वीर्य तत्वम् शोधयामि स्वाहाः, गुरु तत्वम् शोधयामि स्वाहा, शिव तत्वम् शोधयामि स्वाहा, कह कर शुद्धि करते हैं। यह कोई ऐसा नहीं है कि कब करें। क्रमबद्धता का कोई नियम नहीं है। आप आगे पीछे क्रम रख सकते हैं।

श्रद्धालुओं, आप मेरी बात को समझते होंगे जाप या पूजन के बारे में। जहाँ तक पत्र-पुष्प का सवाल है, आप तोड़ते हैं, गुरुजनों को देना है श्री गुरुचरण पादुकाय पत्रम् पुष्पम् समर्पयामि- उनकी पादुका में या उनके हाथों या करकमलों में थमा दिये। नहीं चाहते हैं, फूल तोड़कर लाऊँ, दूसरे का सामान लाकर चढ़ा दूँ, दूसरे की कोई चीज लेकर आपको प्रभावित करूँ, मेरे पास मेरा यह शरीर है, फटा पुराना, यह आपको अर्पण करता हूँ। भगवती आप मुझे सद्‌बुद्धि दें, अच्छी प्रेरणा दें। अच्छे लोगों के साथ जो दूसरे के अधिकार को समझते हो और अपने भी अधिकार को समझते हों, ऐसे लोगों के साथ मिलते-जुलते, उठते-बैठते और कार्य में जब तक जिन्दा रहूँ तब तक कुछ किसी से लेना-देना लादना नहीं और यह जगत का भी जो विल्पव है न सुनूँ न देखूँ और यह न हो पृथ्वी पर तो आपका बड़ा अनुग्रह होगा। न जाने कैसे कैसे व्यवहार-आचरण करने को प्रेरित करते हैं, हो सकता हैं देश, काल, समाज की परिस्थिति से भी हो सकता है। ऐसा हम भी करें मैं नहीं समझता। मैं बहुत चतुर हूँ, मैं सब पर हावी रहता हूँ, मैं सबको छका देता हूँ, सबको मैं नीचा दिखा देता हूँ। इन घृणित कर्मों की ओर हम न देखें और न करने को मुझे बाध्य किया जाय।

ईश्वर कहाँ हैं?

हम ईश्वर को ढूँढ़ रहे हैं। उसको ढूँढ़ते हैं कीर्तन और भजन में, मठ और मंदिरों और न मालूम कि वह किसी दुखिया के दुःख में, उसकी झोपड़ी पर तो खड़ा नहीं है। वह न कीर्तन और भजन में है, ना वह मठ और मंदिरों में है, न बड़े-बड़े विचारकों के विचार में, और न शास्त्र और पुराण में। ओ तो, किसी उस अबला के आँसू में बह रहा होगा। मगर हम लोग क्या कर सकते हैं? क्या कर पायेंगे? कितना कर पायेंगे सिर्फ इंगित मात्र ही कर सकते हैं, वह भी किसको? अपने पास, नजदीक आने जाने वाले बन्धु-बान्धवों को कि देखो, यह अजीब सा है, एक गजब सा है, एक बड़ा ही विचित्र सा है।

ऐसे तो संसार में बहुत से प्राणी हैं, जो बहुत सा उछल कूद मचाते रहते हैं। लोढ़ा भी है, जो मिर्चा पीसे जाते हैं, वे भी कहते हैं, लोढ़ा करै बड़ाई कि हम हूँ शिव के भाई, शिवै के सदृश वह भी, उतना लम्बा वैसे ही उनको भी खरीद कर बनाया गया है। मगर उनसे तो यही काम होता है, मशाला पीसे जाते हैं, और वह भी मिर्चा, न मालूम किस किस तरह के बड़ा विषैले। शिव के सदृश उन पर जल नहीं ढाले जाते। मगर उन पर भी जल चढ़ता है, वही गन्दे जल को ढारता है। वे अपनी बड़ाई में लगे हुए हैं, हम भी उन्हीं के भाई हैं। हमारा भी चेहरा-मोहड़ा, हमारा भी विचार, हमारा कर्त्तव्य उनसे भी ज्यादा हैं। हम तो लोट पोट भी उसमें करते हैं, ओ तो, चुपचाप निहंग बैठे रहते हैं।

बन्धुओं! इसी तरह से हम लोगों का अपने-अपने विचारों का अपने में एक तरह से ओह पोह मचा हुआ है। किन्तु जब वह ओह पोह शान्त हो जाता है, चित्त शान्त हो जाता है तो समझ में आता है कि हम भगवती के, भवानी के, उस उमा गौरी के, बहुत सन्निकट हैं। और उस नाम रूप में भी वह बैठने वाला देवता नहीं है। वह नाम रूप से परे है। नाम रूप से परे उस अज्ञात के चरणों में मेरा मस्तक झुका हुआ है। और उस अज्ञात का वरदहस्त मुझ पर यदि है तो हमारे लिये सब कुछ, इस जीवन में धीरे-धीरे कट जायेगा, वह समय बीत जायेगा, निकल जायेंगे, रुकावट नहीं पड़ेगा।

स्वतः प्रमाणित ईश्वर स्व आत्माराम हैं। उसकी आवाज सुनें

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

आप लोग विभिन्न प्रकार की नई-नई बातें करते रहे। सुनते रहे। मैं आज भी नई बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँगा। ध्यान से सुनें आप देखते होंगे पुरोहितों को, गुरूओं को, बड़े-बड़े उपदेशकों को। जो अपनी बात या विचार कहने लगेंगे तो वो कहेंगे कि वे ही भगवान को अधिक जानते हैं। इस पर मुझको एक कथा याद आती है जो मैं आपसे बता दूँ। एक बार इशू जिसको ईसा मसीह कहते हैं अपनी मृत्यु के बहुत दिन बाद अपने भक्त से मिले और कहे चलो, ईश्वरवादी, धर्मवादी जो अपने को कहते हैं उनकी मुझमें कितनी निष्ठा है, दिखा दूँ। वो खड़े हो गये गिरजे के पास। किसी ने कहा इसू की तरह से बनाया है, किसी ने कहा दम्भ किया है। कई आये, कपट का रूप बनायें हैं कहते हुए चले गये। बहुत से लोगों ने बहुत कुछ कहा। फादर जी आये और बोले भागो यहाँ से। पोप जो उसका सबसे बड़ा धर्मगुरु है उसने उन्हें कमरा में ले जाकर बन्द कर दिया। थप्पड़े उसने सम्मिलित रूप से ही मारा था सबों के सामने। रात्रि जब हुई तो उसने मोमबत्ती जलाकर प्रार्थना किया। मैं जानता हूँ कि आप ईसू हैं। मगर मैंने ठीका ले लिया है। हमारे माध्यम से लोग आपको जानेंगे। आज भगवान भी इस प्रयाग क्षेत्र में स्वयं रामचन्द्र आ जायें और साधुओं से कहें तो कोई नहीं मानेंगे। उसी तरह पोप ने कहा जब आप स्वयं आ जायेंगे तो हमारी जरूरत क्या रहेगी। हम नहीं जानते। हम उसको झिझक कर छोड़ देते हैं। भले ही हम उसके लिए बाद में ग्लानि करें कि हर में हरि को देखें, यही हमारा धर्म था। उस दृष्टि से आध्यात्मिक दृष्टि से भले आप मान लें। किन्तु यदि ऐसे कहें तो आपको भी स्वयं राम, कृष्ण भी आ जायें तो आप नहीं मानेंगे। हाँ, ऐसा कहिये कि यदि गंगा स्त्री रूप में आ जायें तो आप बहुत करियेगा तो कहियेगा कि चले जाओ। धारणा तो आपकी बनी हे पानी के शक्ल में। विग्रह में तो आपकी धारणा बनी नहीं। जैसी धारणा मन पर अपने बना रक्खी है वैसा भी यदि मिलें तब भी आप नहीं स्वीकार करेंगे। हाँ, यदि मिलें अकेले में, अकस्मात् बिजली की तरह, ज्योति रूप में अचानक प्रकाशित हो तो उस प्रकाश को, रोशनी को देखने की, बर्दाश्त करने की सामर्थ्य नहीं है। तो आप सोच लीजिए वह पोप उनको कैसे देख पाये? ये जो तमाम उसके विषय में दयालु, कृपालु जो कहते हैं, इसी तरह से हमारे बहुत साधु फकीर हैं जो कहने को कह जाते हैं, मगर उनके सामने वे ही उपस्थित हो जायें तो वे नहीं मानते। कहने वाला और मानने वाला दोनों अलग व्यवस्था है। राम, कृष्ण की मिलने की बात है। वे उसी शक्ल में नहीं मिलते। दूसरे रूप में मिलते हैं।

कुछ ऐसे कुल परिवार में असुर उत्पन्न हो जाते हैं कि जहाँ पाँच वर्ष के हुए उनको चेतना आई, घर, गृही परिवार की, कुल की अर्जित सम्पत्ति को अस्त व्यस्त कर देते हैं। यदि कुल में सज्जन, देवता का आविर्भाव होता है तो लोग आकर कहने लगते हैं, उसने इसका उपकार किया है, उसने इसकी भलाई की है। तो लोग जो अपने पूर्वजों की बनाई हुई सम्पत्ति को नष्ट कर रहे हैं आप उनको भले चचा, भाई समझिये मगर वो आपके कुल के नहीं है। भले वो हमारे दाऊ, चचा लगते हैं। ऐसे भी हैं जो अच्छे-अच्छे विद्वान हैं, उनकी ख्याति हैं। उनके घर में वे सुन्दर हैं। मगर वे शराबी हैं, लूटते हैं, खून कर देते हैं, आप समझिये वे हमारे कुल के नहीं हैं। जन्म के नाते सम्बन्ध हैं। वे बनाये हुए समाज को नष्ट कर रहे हैं। हमारे कुल में अच्छे आत्माओं का जन्म हो इसीलिए गंगा स्नान, पूजा, होम, जप, ध्यान, धारणा या धर्म किया जाता है। हम तो बड़े अच्छे-अच्छे घरों में देखते हैं कि असुर जन्म ले चुका है। पूर्वजों का धन सम्पत्ति संग्रह किया हुआ नष्ट कर रहा है। आप गाँव-मोहल्ला, टोला में देखियेगा यह प्रत्यक्ष है। ऐसे असुरों को कुलघातक कहते हैं। मगर उसका भाई-बाप, उसका लालन-पालन समझ कर करता है। आपके सामने जज साहब की पत्नी बैठी हैं। उनके चार लड़के हैं। कोई बैरिस्टर कोई ब्रिगेडियर है। मगर उनसे इनको कोई सुख नसीब नहीं। भले ही इनके ही कमाये हुए धन में से वे लूट लेते हैं। मगर ये हमेशा यही समझते हैं कि अपना लड़का है। मगर वो इनके कुल का नहीं है। यह वहाँ से नहीं आया जहाँ से हम आये हैं। जिस कुल से हम आये हैं, जिस जगह से हम आये हैं। ऐसे जो दुश्मन हैं, वो अपने ही कुल को तहस-नहस कर देता है। उसी को बचाने के लिए, हमारी कोख से ऐसा असुर जन्म न ले, धर्म, आराधना, गंगा स्नान, पूजा किया जाता है। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं, हे भगवान हम गरीब हो तो हों किन्तु कुल में जन्म लेने वाला सज्जन हो। बनाये हुए कुल मर्यादा को कायम रखे। महाभारत में आप देखते हैं असुर का जन्म हो गया। सब नष्ट हो गया। आप जो लूटकर, लुटवा कर जमा करते हैं कि हमारे बेटे के लिए है तो ऐसा असुर जन्म लेगा, उसके साथ आप वाला भी धन उठाकर फेंक देगा। इसीलिये प्रयाग की इस पुण्यस्थली में हम ध्यान-धारणा, स्नान, कल्पवास करते हैं कि हमारा विचार अक्षय बना रहे। उसका क्षय नहीं हो। काल-काल तक चलता रहे। असुर हमारे यहाँ जन्म न लें। देखिये कितने साधु मेला में आये हैं। कोई राम की पूजा करता है, कोई कृष्ण की। कोई रास करता है। अनेक तरह के साधु आये हैं। केवल इन्हीं को नहीं आप लोग गाँव में, टीले में, मुहल्ले में भी यह देखते हैं। इन सबों को भूत लगा है। किसी को राम का, किसी को कृष्ण का, किसी को काली का। मगर ये लगी हुई आत्मायें जो हैं वो बड़ी-बड़ी आत्मायें हैं। जिनके लगे होने से ज्ञान-वैराग्य होता है। श्री वास्तव को नीम के पेड़ को भूत लगता है। हम सब लाख कहते हैं किन्तु वह नहीं मानता।

वो कौन आत्मा है। जो इन लोगों को लगता है। उनको कृष्ण नहीं लगे, राम नहीं लगे। जब ऐसी आत्मा को देखता हैं, चिल्लाता है, वह आत्मा बोलवाता है। जो जिसका उपासक है उसे वह लगा हुआ है। लोग स्वतः प्रमाण और परतः प्रमाण की बात करते हैं। कोई शास्त्र से, कोई पुराण से, कोई गीता से, कोई रामायण से, कोई वेद से ईश्वर को प्रमाणित करते हैं। स्वतः प्रमाणित जो ईश्वर है, उसका जो आराधक है, वह स्वात्माराम का आराधक है। उसे वेदशास्त्र से प्रमाण की आवश्यकता नहीं। ध्यान, धारणा, तपस्या इत्यादि से उत्पादित तो ठीक उसी तरह है जैसे खेत में गेहूँ, बोये गेहूँ, चना बोये चना। मंत्र, ध्यान क्रिया द्वारा जिसे देखते हैं वह उत्पादित हैं। मैं उत्पादित ईश्वर की आराधना करने को नहीं कहता। मंत्र, क्रिया, औषधि, ध्यान, धारणा द्वारा जो उत्पादित न किया गया हो। मैं उसकी आराधना कहता हूँ। वह ईश्वर सदैव हमारे साथ है। उस स्वात्मा राम की आवाज सुनें तो वही अनुभूति जिसके लिये योगियों ने तपस्या की। हमें मिलती है। ध्यान, धारणा, क्रिया से जो उत्पादित किया गया है, उसकी यदि आराधना करते हैं तो जरा-मरण हैं उससे अलग नहीं होते। जन्म-मरण से छुटकारा नहीं मिलता। हमें भूने बीज की तरह होना है। जो इस तरह के ईश्वर के आराधना से नहीं होता। जब आप स्व आत्माराम को संजोयेंगे, जानेंगे, तभी होगा। नहीं तो इसू वाली कहावत होगी। आप तो सभी बातें जानते हैं। किन्तु उपदेशकों को सात दिन बिताना है। आपको समझना है, दाल, भात, तरकारी। इसीलिये स्वतः प्रमाण, परतः प्रमाण आदि बातें हैं। उत्पादित ईश्वर मंत्र ध्यान, धारणा और तप के द्वारा जो भगवान मिल गया तो इस मिलने से क्या होगा। आपको सिद्धियाँ मिलेंगी। अच्छी वाणी होगी। मगर जन्म-मृत्यु से भूने बीज की तरह वह जो निर्वाण पद है नहीं मिलेगा। यह तभी प्राप्त होगी जब उस तरह की आपकी उपासना होगी। निष्ठा होगी। तुलसी को भी विश्वास नहीं था कि हमारा पुनर्जन्म नहीं होगा। इसीलिए उन्होंने कहा "जेहि योनि जन्महूं राम पदा" चाहे कुत्ता, सियार, बिलार, जिस भी योनि में जन्म लें हम पुनः आपको स्मरण कर सकें। मगर फिर दूसरे, तीसरे, सैकड़ों जन्म तक आपको प्रयत्न करना होगा। इस तरह सैकड़ों जन्म यदि लगा रहेगा तो बड़ा दुःख होगा। आप अपनी वासना के अनुसार कभी बिलार, कभी कुत्ता, नाना योनि में भटकते रहेंगे। निर्वाण के लिये वास्तविकता की ओर चलना होगा। वास्तविकता यह है कि उत्पादित वह नहीं है। एक कवि तो कहता है जाको लागे ज्ञान समाधि वो क्या ध्यान लगावें। जो ध्यान करते हैं, जो उसके विराट रूप को देखते हैं उनको प्रमाण की आवश्यकता नहीं। एक ओर जो विराट रूप देखता है और दूसरी ओर शास्त्र से, पुराण से, वेद से प्रमाणित करता है वह कपट करता है। ईश्वर को बाँधता है। आप ही कहिये न जिस ईश्वर को सर्वज्ञ और सर्वव्यापी कहें उसे मन्दिर-मस्जिद में ही खोजें तो आप जान लीजिये कि भगवान भी कहेगा या तो सर्वव्यापी सम्बोधित करें या उसे वेदशास्त्र, पुराण, उपनिषद से प्रमाणित करते हैं। वह बुड़वक नहीं है और इस तरह का मनोभाव अपने ही चित्र पर आवरण हो जायेगा। वह कभी आपकी समझ में नहीं आयेगा। और इस तरह सम्पूर्ण जीवन बीत जायेगा। मैंने जो कुछ भी कहा है, आप उसका मनन करेंगे। मित्रों में सोचेंगे, समझेंगे। स्वतः प्रमाणित या परतः प्रमाणित उत्पादित भगवान कौन है। स्वतः जो किसी के द्वारा उत्पादित नहीं है वो कौन है। आप कौन हैं, उनका स्थल क्या है। इन सभी बातों पर मैं आशा करता हूँ आप चिन्तन, मनन करेंगे।

अघोर सूत्र

- **कापालिक उसे कहते हैं, जिसने काल का भक्षण किया है, जिसका कि आकाश के कपाल में आलय हो। जो सभी ब्रह्माण्ड का निर्माता हो।**
- **यह जीवन तो क्षणिक है। पता नहीं कब तक चलेगा।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी